

# SEARCH FOR PEACE

A Collection Of Devotional
Ideas & Invocations
By
Dr Ram Lakhan Prasad

# SEARCH FOR PEACE, JOY & CONTENTMENT

This ia a collection of devotional poems and stories that I have created over the past few years.

By
Dr Ram Lakhan Prasad

SUKH SHANTI AUR KHUSHI KI PRAPTI सुख, शांतिऔर ख़ुशी की प्राप्ति SEARCH
FOR
PEACE
JOY
&
CONTENTMENT

By

**Dr Ram Lakhan Prasad** 

2018

सुख, शांति और ख़ुशी की प्राप्ति

निबंध, कवितायेँ और भक्ति भाव का संग्रह

डाक्टर राम लखन प्रसाद २०१८

#### **TABLE OF CONTENTS**

- 1. Bhumika
- 2. Bidyarthi Jeevan
- 3. Pariwarik Jeevan
- 4. Samaj Sewa
- 5. Navin Jeevan
- 6. Karm Pradhan
- 7. Bhakti Bhav Ki Rachnayen
- 8. Saubhagya
- 9. Tript Ho Gaya
- 10. Shakti Dena
- 11. Naiya Paar Laga Dena
- 12. Wastawik Rachnayen
- 13. Upsanghar



# भूमिका

## सुख, शांति और ख़ुशी की प्राप्ति

शायद बचपन से ही हमारा लक्ष्य अपने जीवन में सुख प्राप्ति करना था पर जैसे जैसे उमर बढ़ती गयी यह विचार और भी मजबूत हो गया था | आज जब बुढ़ापा आगया है तो अब हमारा यही एक आवश्यकता नज़र आता है | जवानी में मेरे लिए सुख की प्राप्ति का मतलब और कुछ था | उस समय धन दौलत के पीछे मैं भाग रहा था | समाज में अपना नाम अमर करने को भी प्रयत्न करता रहा | फिर अपने शरीर को और भी ताकतवर बनाने की कोशिश करता रहा |

हम ने खूब ध्यान लगा कर पढ़ा लिखा, समाज की सेवा भी किया तथा अपने परिवार को भी सुसज्जित बनाया | देश विदेश घूमा, कई संस्थाओं का मुख्य पदवी भी हासिल किया और न जाने कितने मनोरंजन के सामान घर में इक्कठा कर के उनसे लाभ उठाया | दोस्तों और पारिवारिक जानो के साथ गुलर्छरें उड़ाए तथा काफी दया दान और पूजा पाठ भी किया लेकिन इन सब प्रयत्नों के बावजूद हम को न तो पूरी ख़ुशी मिली और न ही पुरे तौर पर सुख की प्राप्ति हुयी | मैं प्यासा का प्यासा ही रह गया | हमारे अंदर एक बहुत बड़ा परेशानी थी, एक अजीब सा तनाव था या यूँ कहिये कि एक अनजान खिचाओ था जिसको मैं रोज सुलझाने कि कोशिश करता रहा |

इतना निराशा होते हुए भी हम ने कोई चित्र-विचित्र हरकतों को नहीं किया क्यूंकि मेरे बुजुर्गों ने हम को श्रेष्ट आचार विचार दिए थे | यही एक कारन था कि हम अपने सुखी और ख़ुशी रहने की खोज जारी रखा |

हमारे अंदर की सभी भावनाओं को हमने इस पुस्तिका में प्रतुत करने की कोशिश की है। आशा है पाठक हमारे इन भानवों और रचनाओं को पढ़ेंगे और गुनेंगे जिससे उन के जीवन में भी वही भक्ति भाव उत्पन्न हो जाएँ जो हमारे मन में विराजमान हैं।



### विद्यार्थी जीवन

विद्यार्थी जीवन किसी भी व्यक्ति के जीवन का महत्त्वपूर्ण काल होता है। इसी काल पर व्यक्ति का संपूर्ण भविष्य निर्भर करता है। इस काल का सदुपयोग करने वाले विद्यार्थी अपने शेष जीवन को आरामदायक और सुखमय बना सकते हैं। इस काल को व्यर्थ के कार्यों में नष्ट करने वाले विद्यार्थी अपने भविष्य को अंधकारमय बना देते हैं। विद्यार्थी जीवन में ही व्यक्ति के चिरत्र की नींव पड़ जाती है। अतः इस जीवन में बहुत सोच-समझकर कदम उठाने की जरूरत होती है।

विद्यार्थीयों को इस अविध में अपनी शिक्षा स्वास्थ्य खेल-कूद और व्यायाम का समुचित ध्यान रखना चाहिए । उन्हें पिरश्रमी और लगनशील बनना चाहिए । इस काल में स्वाध्याय को सफलता का मूलमंत्र मानना चाहिए । उन्हें हर प्रकार की बुरी संगति से बचना चाहिए । उन्हें नम्र बने रहकर विद्या ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए । उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखकर विद्यार्थी जीवन को सफल बनाया जा सकता है ।

हमारा विद्यार्थी जीवन साधना और तपस्या का जीवन था। यह काल एकाग्रचित्त होकर अध्ययन और ज्ञान-चिंतन का था। यह काल सांसारिक भटकाव से स्वयं को दूर रखने का काल था। विद्यार्थीयों के लिए यह जीवन अपने भावी जीवन को ठोस नींव प्रदान करने का सुनहरा अवसर है। यह चिरत्र-निर्माण का समय है । यह अपने ज्ञान को सुदृढ़ करने का एक महत्त्वपूर्ण समय है ।

हमारा विद्यार्थीजीवन पाँच वष की आयु से आरंभ हो गया था। इस समय जिज्ञासाएँ पनपने लगती हैं। ज्ञान-पिपासा तीव्र हो उठती है। बच्चा विद्यालय में प्रवेश लेकर ज्ञानार्जन के लिए उद्यत हो जाता है। उसे घर की दुनिया से बड़ा आकाश दिखाई देने लगता है। नए शिक्षक नए सहपाठी और नया वातावरण मिलता है। वह समझने लगता है कि समाज क्या है और उसे समाज में किस तरह रहना चाहिए। उसके ज्ञान का फलक विस्तृत होता है। पाठ्य-पुस्तकों से उसे लगाव हो जाता है। वह ज्ञान रस का स्वाद लेने लगता है जो आजीवन उसका पोषण करता रहता है।

मेरा भी यही हाल हुवा और मैं एक निपूर्ण विद्यार्थी बनने के लिए सन १९४५ में तत्पर हो गया था । मेरे शिक्षा दीक्षा की गाडी सुचारु रूप से चलने लगी थी ।

विद्या अर्जन की चाह रखने वाला विद्यार्थी जब विनम्नता को धारण करता है तब उसकी राहें आसान हो जाती हैं । विनम्न होकर श्रद्धा भाव से वह गुरु के पास जाता है तो गुरु उसे सहर्ष विद्यादान देते हैं । वे उसे नीति ज्ञान एवं सामाजिक ज्ञान देते हैं, गणित की उलझनें सुलझाते हैं और उसके अंदर विज्ञान की समझ विकसित करते हैं । उसे भाषा का ज्ञान दिया जाता है तािक वह अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सके । इस तरह विद्यार्थी जीवन सफलता और पूर्णता को प्राप्त करता हुआ प्रगतिगामी बनता है ।

मेरा यह विद्यार्थी जीवन मानवीय गुणों को अंगीभूत करने का काल था। सुख-दु:ख, हानि-लाभ, सर्दी-गर्मी से परे होकर जब मैं नित्य अध्ययनशील हो जाता था तब मेरा जीवन सफल हो जाता था। विद्या प्राप्ति के निमित्त कुछ कष्ट तो उठाने ही पड़ते थे, आग में तपे बिना सोना शुद्ध नहीं होता। इसलिए आदर्श विद्यार्थी जीवन में सुख की चाह न रखते हुए मैं केवल विद्या की चाह रखता था। में धैर्य, साहस, ईमानदारी, लगनशीलता, गुरुभक्ति, स्वाभिमान जैसे गुणों को धारण करता हुआ जीवन-पथ पर बढ़ता ही चला जाता था।

में संयमित जीवन जीता था ताकि विद्यार्जन में बाधा उत्पन्न न हो । में नियमबद्ध और अनुशासित रहता था और समय की पाबंदी पर विशेष ध्यान देता था ।

विद्या केवल पुस्तकों में नहीं होती । ज्ञान की बातें केवल गुरुजनों के मुखारविन्द से नहीं निकलतीं । ज्ञान तो झरने के जल की तरह प्रवाहमान रहता है । विद्यार्थी जीवन इस प्रवाहमान जल को पीते रहने का काल है । खेल का मैदान हो या डिबेट का समय, भ्रमण का अवसर हो अथवा विद्यालय की प्रयोगशाला, ज्ञान सर्वत्र भरा होता है । विद्यार्थी जीवन इन भांति- भांति रूपों में बिखरे ज्ञान को समेटने का काल है । स्वास्थ्य संबंधी बातें इसी जीवन में धारण की जाती हैं । व्यायाम और खेल से तन को इसी जीवन में पुष्ट कर लिया जाता है । विद्यार्थी जीवन में पढ़ाई के अलावा कोई ऐसा हुनर सीखा जाता है जिसका आवश्यकता पड़ने पर उपयोग किया जा सके ।

#### पारिवारिक जीवन

पुरे पंद्रह वर्षों के कठिन कोशिशों के बाद जब विद्यार्थी जीवन अपने चरम सीमा पर पंहुचा तब मैं भी एक अध्यापक बन कर सामाजिक सेवा करने निकल पड़ा था । अविवाहित जीवन के अपने चार वर्षों का समय अपने माता पिता से दूर घर से कोसों दूर बिता कर जब मैं अपने घर आया तब मेरा शुभ विवाह एक अध्यापिका के साथ हो गई और हम दोनों अपने ही गावं के पाठशाला में बच्चों को शिक्षा देना आरम्भ किया । अपने पुरवज्जों के छत्र छाया में रह कर हम दम्पति पारिवारिक सुख को भोगते रहे ।

सरकारी नौकरी थी इस लिए हमारी तबादला फिर घर वालों से दूर एक छोटे से गावं में हो गई जहाँ हम को कई सुविधाओं से वर्जित रहना पड़ा लेकिन हम उस समाज की सेवा में ऐसे जुटे कि कई दैनिक सुविधाओं को वहां के जनता तक पहुंचने में भरसक्त कोशिश किया । हमारे कार्य और लगन को देख कर सरकार ने हम दोनों प्राणी को छात्रवृति प्रदान किया जिससे हम विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त कर के सेकेंडरी स्कूलों में पढ़ाने के काविल हो जाएँ । जहाँ हम अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे वहीँ हमने अपना निवास स्थान का निर्माण भी

किया । अब तक हम देश के मुख्य नगर में शिक्षा विभाग के उच्च पदिवयों पर भी पहुँच गए थे और हमारे आँगन में अपने चार बच्चे खेल कूद रहे थे । उन सब का पालन पोषण और शिक्षा दीक्षा हमारा एक मात्र लक्ष हो गया था ।

जब सब बच्चे पढ़ लिख कर होशियार हुए तब उनका भी विवाह कर के हम मानो गंगा स्नान कर लिए थे। इस के बाद जब हमारे सभी बच्चे अपना अपना गृहस्थ जीवन विटाने लगे तब हम भी अपने मात्र वतन को छोड़ कर ऑस्ट्रेलिया के निवासी बन गए और वहां भी अध्यापन का कार्य करते रहे। अपने बच्चों के मदद और सलाह से हम ने अपना निवास स्थान बना कर चैन से रहने लगे। जीवन खुशियों से चलता रहा।

समय बीतता गया और हम ने अपने सभी रोजीना काम से छुटकारा पा लिया और 2005 में अवकाश ले लिया | अपने सभी बच्चों की शादी विवाह कर दी और घर द्वार को सभी कर्जों से छुड़ा लिया | एक तरफ ऐसा लगा की अब मैं स्वतंत्र हो गया हूँ लेकिन फिर भी मैं अपने निजी सुख और ख़ुशी को खोजता रहा | इस बीच मेरी अर्धांगनी का देहांत भी हो गया और मेरा पच्चास वर्षों का साथी हम से दूर हो गया | मेरे ऊपर जैसे बिजली गिर पड़ी और मैं तड़पने लगा | एक तरफ अकेलेपन की तन्हाई और दूसरे तरफ पत्नी वियोग की असहाय लपट हम को चकना चूर कर दिया |

मुझे कुछ सूझता ही नहीं था | न दिन में चैन न रातों को आराम रहता था | हम ने अपने पत्नी के वियोग में हज़ारों कवितायेँ और लेख लिखी, संगीत से सुसज्जित चलचित्र बनाये और परिवार तथा दोस्तों से कितने सहानुभूति प्राप्त किये लेकिन कलेजे में जो वियोग की आग धधक रही थी उस को हम चाहते हुए भी नहीं बुझा पाये |

लोग कहते रहे की समय बलवान है और समय ही हमारी सब दुःख, सोच, विरह और फ़िक्र को दूर कर देगा | समय चलता रहा लेकिन वैसा कुछ नहीं हुवा जिस से मुझे शांति और सुख की प्राप्ति होती | मैं हताश होने लगा था और चिंता हम को रोज घेरे रहती थी |

मैं ने कितने सामाजिक और प्रोत्साहित करने वाली किताबें लिखा और प्रकाशित किया | मेरे सभी पुस्तकों को लगभग चालीस हज़ार लोग पढ़ चुकें हैं और इस की तादाद बढ़ती ही जा रही है | पर इन सभी सफलताओं के बावजूद भी न जाने मुझे सुख, शांति और ख़ुशी क्यों नहीं हासिल हुयी | इस का भी कोई कारन रहा होगा |

मेरे प्रियतम के निधन को लगभग तीन साल होने वाले थे और हम ने एक संकल्प किया की जब आवागमन संसार का विधान है तब क्यों नहीं हमारी पत्नी वापस जनम ले सकती है | हम को शारीरिक अवतार की जरुरत नहीं थी पर हम को उन के आत्मा से प्रेम था और वही मैं चाहता था | विश्वास में फल होता है और वही हुवा जो मेरा दढ आस्था या विश्वास था | मेरा आराधना, मेरा प्रार्थना और मेरा नमन कामयाब हुवा | बस हम को तो यही चाह थी | परमात्मा ने मेरी विनती सुनली |

मैं ने अपने आप को परमात्मा के हवाले कर दिया और उनसे अपने स्वर्गीय पत्नी के प्राण को अपने प्राण में लीन होने की अकथ प्रार्थना किया। अब इस को चाहे कोई हमारी पागलपन समझे, भक्ति भाव का पक्का इरादा कहे या मनो विज्ञानिक चमत्कार ठहराए पर हुवा वही जो मैं चाहता था।

मैं ने अपने कितने शाश्तो और ग्रंथों को पढ़ना, गढ़ना और समझना शुरू किया | हम को यह आभास हुवा कि अनंत सुख और ख़ुशी का खजाना हमारे अंदर ही छुपा है | मैं ने यह संकल्प कर लिया कि धीरे धीरे मैं भी अपने सभी सुख और ख़ुशी का सही मार्ग ढूंढ निकालूँगा | मैं जानता था की यह रास्ता कलियुग में आसान नहीं है लेकिन मेरी आंतरिक भावना ने हम को प्रोसहित किया की यह नामुमकिन भी नहीं है |

बस हम इसी भक्ति के रास्ते को लेकर आगे चल पड़े और अब मुड़ कर देखना हमारे बस में नहीं है | मैं ने भी भक्ति का महान गौरव और प्रताप का ज्ञान अपने अंदर जता लिया है | यही मेरे लिए अब शांति, सुख और ख़ुशी का चमन है |

भजन, कीर्तन, ग़ज़ल और संगीत में मन लगाने लगा | मेरी पत्नी मेरे लिए पूजनीय लक्ष्मी बन गयी और मैं भगवन भक्ति में चूर होने लगा | अब रोजीना हम दोनों एक दूसरे से वार्तालाप करने लगे | यह हमारी शारीरिक मिलन नहीं थी पर प्रभू के कृपा से यह हमारे लिए भले ही काल्पनिक साधना थी पर मैं आध्यात्मिक और मानसिक रूप से अपने पत्नी में भगवान का स्वरुप देखने और पाने लगा | जिस दिन से यह ध|रना मेरे अंदर उत्पन्न हुयी उस दिन से मैं अपने अर्धांगनी को सदा अपने पास ही पाया और हमारे सभी सोच, फ़िक्र, दुःख, दर्द और तड़प गायब हो गयी |

हम ने अपने जीवन में बहुत कुछ पाया है इस लिए जो कुछ थोड़ा सा खोया है उन को मैं नज़र अंदाज़ करने का स|हस रखता हूँ | अब मेरे जीवण की परिस्तिथियाँ बदलने लगी हैं और मेरा मनस्तिथि में भी अब बहुत तबदीली हो गयी है | फल स्वरुप मैं अब ज्यादा समय प्रसन्नता के सागर में स्नान करने लगा हूँ | इस लिए मुझे भी अब सुख की प्राप्ति होने लगी है और मैं भी खुश रहने लगा हूँ | यह सब हमारे अटल विश्वास और परमेश्वर में भरोसा पर निर्धारित है |

अब हमारे पाठकगण यह देख सकतें हैं कि वह कौन सी विचारधारा थी जिस के जिरये मेरी काफी परेशानी, खिन्नता, उदासी और विषाद अहिष्ते आहिष्ते हम से विदा होती रहीं | सर्वप्रथम मैं ने अपने आप से कई ख़ास सवाल किये और उन का सही जवाब खोज| | जैसे मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? मेरा जनम इस संसार में क्यों हुवा है? मेरे जीवन में पहले क्यों इतने स|रे दु:ख तकलीफआ रहे थे? मेरे इस संसार से चले जाने के बाद मेरा क्या होगा? वगैरह वगैरह |

जब धीरे धीरे हम ने इन सब सवालों का सही जवाब ढूँढा तो मेरे मन को बहुत ही शांति और सुकून मिली | फिर जब मैं ने भजन, कीर्तन, ग़ज़ल, संगीत और सही तथा सच्चे ग्रंथों का सहारा लिया तो मेरे विचार ध|रा में चार चाँद लग गए | एक ज्योति सी मेरे आँखों के सामने चमक पड़ी तथा मैं अपने तीसरे आँख से अपना भूत, वर्तमान और भविष्य को उचित रूप से देखने लगा | यही हमारी जागरण थी और मैं जिस टुक नींद में सोया था उस से जाग कर नेत्र हीन हिंदी साहित्ये गगन के सूर्य सूर दास के भाँती देखने लगा | तब हम को ज्ञांत हुवा की ईश्वर की कृपा से सब कुछ प्राप्त हो जाता है | मैं एक दीन पुजारी

बना और मेरे भगवन मेरे दीनबंधु हुए और मेरी सभी विपत्तियों को दूर करते रहे | मैं एक शरणागत हुवा जिसकी रक्षा होने लगी | मेरा आत्मसमर्पण मेरे लिए एक बरदान हो गया |

मैं कोई जोगी, तपस्वी या त्यागी तो नहीं हूँ पर इतना जरूर कहूँगा की मैं अपने साधना से एक साधक जरूर होने का प्रयास कर रहा हूँ | अब मैं संसार, समाज या धरम के व्यर्थ विचारों से दूर जा रहा हूँ तथा मेरे पास अब कोई भी पाखंड, मक्कारी, दिखावा या पोपलीला नहीं है | हमारा धर्म केवल सच्चाई, अच्छाई और सुंदरता पर आधारित है | मैं अपने इन तीनो गुणों को लिए अपने वचन, कर्म, आचार विचार, दिल और दिमाग तथा व्यवहार से अपने आप को सुसज्जित करने की कोशिश करता हूँ | मेरा दह विश्वास है की मैं अपने धर्म, कर्म और मार्ग में सफल होऊँगा | अगर कभी फिसल भी गया तो कोशिश कर के सँभालने की भी ताकत या इक्षा रखता हूँ | मैं अब हार मानने वाला नहीं हूँ |

परमात्मा ने मुझे मेरे पापों से उद्धार इस लिए किया है क्यों की मैं दीनतापूर्वक आत्मसमर्पण किया | मैं एक सच्चा शरणागत बना जिसकी रक्षा करने में दीनबंधु भगवान अपना दयालुता दिखा कर हम को कृतार्थ किया | अब मैं यह समझ गया हूँ की दीनता हमारे जैसे भक्त का एक मात्र आभूषण है और जितनी अधिक दीनता हमारे में होगी मैं उतना ही अधिक अपने भगवान के निकट जाता रहूँगा | मेरा घर आँगन ही अब मेरा मंदिर है और मेरे रोम रोम में परम पिता परमेश्वर की शक्ति दौड़ रही है | मेरी एक ही इक्षा है | मेरे भक्ति को कोई आंच न लगे |

मेरे अन्तरेष्टि तक मेरा भी मुक्ति हो जाये बस यही मेरी अंतिम इक्षा है | जब तक जीवित रहूँ मैं अपने ईश्वर के चरणो से लिपटा रहूँ | बस इस के सिवा हमको और कुछ की आवश्यकता नहीं है | अब मैं अपने बचे समय में कुछ भक्ति भाव की कविताये रचने जा रहा हूँ लेकिन मेरा लक्ष्य खुद अपने आप को ज्योति दिखाना है | कोई मेरे पारिवारिक जन, साथी या मिंत्र अगर मेरे उपमा से संतुष्ट हैं और मेरा अनुकरण करना चाहते हैं तो मेरे घर मंदिर का दरवाजा उन के लिए किसी भी प्रकार के सत संघत के हेतु सदा खुला रहेगा |

हम केवल भगवत चर्चा करेंगे पर कोई परपंच, ढकोसला या पाखंड को मान्यता नहीं देंगे | भजन भाव कीर्तन तथा शास्त्र अध्यन ही हमारा एक मात्र लक्ष्य होगा | हमारे अंदर का भक्त जाग उठा है और वो सत्यम सुखम सुंदरम का गीत गाता है और गंभीरता पूर्वक यही कहता है कि परमात्मा अजर है, अमर है, सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है तथा सर्वज्ञानी है | उस से न तो कुछ छुपा है, और न ही कोई ऐसी जगह है जहाँ वो नही है तथा वो हम सब से शक्तिमान है इस लिए वह आप के भक्ति, प्रेम और विश्वास के सिवाय और कुछ नहीं चाहता है | जय हो मेरे भगवान की और जय हो इस धरती माता की जिस पर हम निवास करते हैं |



#### Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below

